केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

NEP – 2020 के अनुसार पाठ्यक्रम-CBCS – इतिहास विषय

शास्त्री (B.A.) Program

इतिहास में शास्त्री(B.A.) कार्यक्रम की प्रस्तावित वर्षवार संरचना

इतिहास मानव अतीत का विश्लेषण और व्याख्या है जो हमें निरंतरता और समय के साथ हो रहे परिवर्तनों का अध्ययन करने में सक्षम बनाता है। यह जांच और कल्पना दोनों का एक कार्य है जो यह समझाने की कोशिश करता है कि समय के साथ लोग कैसे बदल गए हैं। इतिहासकार अतीत की जांच, व्याख्या, पुनरीक्षण और पुनर्व्याख्या करने के लिए सभी प्रकार के साक्ष्य का उपयोग करते हैं। इनमें न केवल लिखित दस्तावेज शामिल हैं, बल्कि मौखिक संचार और भवन, कलाकृतियां, तस्वीरें और पेंटिंग जैसी वस्तुएं भी शामिल हैं। इतिहासकारों को इन स्रोतों की खोज और मूल्यांकन के तरीकों और उनमें से ऐतिहासिक अर्थ निकालने के चुनौतीपूर्ण कार्य में प्रशिक्षित किया जाता है। इतिहास अतीत और वर्तमान को समझने का एक साधन है। अतीत की अलग-अलग व्याख्याएं हमें वर्तमान को अलग तरह से देखने की अनुमति देती हैं और इसलिए अलग-अलग भविष्य की कल्पना करती हैं और काम करती हैं। इसे अक्सर सामाजिक विज्ञानों की "रानी" या "माँ" कहा जाता है। यह अध्ययन के सभी विषयों का आधार है जो मानविकी और सामाजिक विज्ञान की श्रेणी में आते हैं। यह दर्शन, राजनीति, अर्थशास्त्र और यहां तक कि कला और धर्म के अध्ययन का भी आधार है। कोई आश्चर्य नहीं, मनुष्य की संपूर्ण शिक्षा में इसे एक अनिवार्य विषय माना जाता है।

Programme Outcomes

कार्यक्रम के अंत में छात्रों से निम्नलिखित परिणामों की अपेक्षा की जाती है-

PO1: ऐतिहासिक प्रक्रियाओं की समझ विकसित होगी।

PO2: भारतीय पारम्परिक ज्ञान एवं कला की समझ विकसित होगी।

PO3: ऐतिहासिक घटनाओं एवं प्रकरणों की पृष्ठभूमि का विश्लेषण करने की समझ विकसित होगी।

PO4: भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के प्रति जागरुकता उत्पन्न होगी।

PO5: इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य शिक्षार्थी को इतिहास के व्यापक अनुशासन के दृष्टिकोण के साथ उन्मुख करना है।

PO6: स्वयं, सामाजिक, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के बीच की जटिलताओं को संबोधित करने की क्षमता विकसित करना।

PO7: यह कार्यक्रम छात्रों के बीच वैज्ञानिक और व्यावहारिक दृष्टिकोण विकसित करता है जो उनके दैनिक जीवन में मदद करता है।

Programme Specific Outcomes

कार्यक्रम के अंत में छात्रों से निम्नलिखित विशिष्ट परिणामों की अपेक्षा की जाती है-

PSO1: भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के प्रति जागरुकता उत्पन्न होगी।

PSO2:प्रशासनिक एवं अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं में सफल होने में सहायक होगा।

PSO3:किसी भी घटना या प्रकरण का उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में विश्लेषण करने की क्षमता विकसित होगी।

PSO4; किसी घटना का आलोचनात्मक सोच, तार्किक विश्लेषण करने की समझ बढ़ेगी।

PSO5:यह इतिहास के विषयों और मुद्दों के आधार पर विश्लेषणात्मक और आलोचनात्मक सोच विकसित करने में मदद करेगा।

PSO6:यह इतिहास की बुनियादी अवधारणाओं को समझने और क्षेत्र के उभरते क्षेत्रों के बारे में जागरूकता में मदद करेगा।

PSO7: रोजमर्रा की जिंदगी में इतिहास के साथ-साथ अंतःविषय विषयों के व्यावहारिक पहलुओं की गहन समझ हासिल करना।

Certificate in Fundamentals of History

शास्त्री प्रथम वर्ष- प्रथम सत्रार्द्ध

'' भारत बोध ''

Course Outcomes

पाठ्यक्रम के अंत में छात्रों से निम्नलिखित परिणामों की अपेक्षा की जाती है-

CO1: प्राचीन भारत के लोगों की सांस्कृतिक स्थिति के बारे में जानेंगे।

CO2: प्राचीन भारत के समाज, धर्म और राजनीतिक समाज के बारे में अवगत होंगे।

CO3: प्राचीन भारत के बदलते सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्यों का भी ज्ञान प्राप्त करेंगे।

पेपर कोड GE 1-'' भारत बोध ''

खण्ड	खण्डनाम	इकाई	इकाई परिचय	कालांश		क्रेडिट-4	अंक
				लेक्चर	ट्यूटोरियल		
1	भारतवर्ष की संकल्पना	I	भारतवर्ष: एक परिचय	14	2	1	25
		II	भारतवर्ष की शाश्वतता				
		III	समय और काल की भारतीय अवधारणा				
		IV	भारतीय साहित्य का गौरव: वेद, वेदांग, उपनिषद, महाकाव्य, जैन एवं बौद्ध साहित्य, स्मृति, पुराण आदि।				
2	भारतीय पारम्पारिक ज्ञान, कला और संस्कृति	I	भाषा व लिपि का मूल्यांकन : ब्राह्मी, खरोष्ठी, पालि, संस्कृत, तिगलिरी आदि	14	2	1	25
		II	भारतीय कला व वास्तुकला की परम्परा- नागर, द्रविड़, बेसर				

		III	भारतीय शिक्षा प्रणाली (वैदिक)				
		IV	प्राचीन भारत में वैदिक गणित, विज्ञान व तकनीकः खगोल, रसायन विज्ञान, आयुर्वेद, योग				
3	भारतीय धर्म, दर्शन और " वसुधैव कुटुम्बकम्"	I	भारतीय धर्म और दर्शन की अवधारणा	14	2	1	25
		II	वसुधैव कुटुम्बकम की अवधारणा मनुष्य, परिवार, समाज एवं विश्व				
		III	राजनीति और शासन				
		IV	जन,जनपद व ग्राम स्वराज्य की अवधारणाः लोकतंत्र की जननी, राष्ट्र की अवधारणा				
4	भारतीय अर्थ नीति और परम्पराएँ	I	भारतीय आर्थिक विचारः अर्थशास्त्र	14	2	1	25
		II	भूमि, वन , कृषि तथा पशुपालन की अवधारणा				
		III	उद्योग एवं शिल्प, व्यापार और वाणिज्य				
		IV	अंतर्देशीय व सामुद्रिक व्यापार				
				64		4	100

Suggested Readings :

(1) Bhagvadatt : वृहद भारत का इतिहास, प्रणव प्रकाशन, नई दिल्ली

(2) डॉ राजबली पाण्डेयः प्राचीन भारत, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,2015

(3) के.सी.श्रीवास्तवः प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, यूनाइटेड बुक डिपो

(4) A.L. Basham: The wonder that was India, Rupa Delhi 1994

(5) Govind Chandra Pandey: भारतीय संस्कृति, हिंदी ग्रंथअकादमी, भोपाल, 2008
(6) Govind Chandra Pandey: वैदिक संस्कृति, लोक भारती प्रकाशन, दिल्ली
(7) Kapil Dev Dwivedi: वेदों में विज्ञान, विश्वाभारती अनुसंधान परिषद, 2014
(8) Narendra Mohan: भारतीय संस्कृति, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2011
(9) Omprakash Pandey: दृष्टव्या जगत कायतार्थ, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2005
(10) Radha Kumud Mookerji: Indian Shipping, Pub South Asia Books, 1999
(11) Rajbali Pandey: भारतीय पुरालिपी लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1998
(12) Satish Chand Mittal: भारतीय संस्कृति के चार अध्याय, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, दिल्ली, 2018
(13) Shri Arvind: भारतीय संस्कृति के आधार, अदिति कार्यालय, अरविंद आश्रम, पोडिचेरी
(14) Vasudev Sharan Aggarwal: पाणिनी कालीन भारतवर्ष, पृथ्वी प्रकाशन वाराणसी
(15) Vishambhar Sharan Pathak: देश के अभिधान, पूर्वा संस्थान, गोरखपुर, 1992
(16) Radha Kumud Mookerji: The Fundamental Unity of India
(17) Balbir Singh Sihag: Kautilya: The true founder of Economics, Vitasta Publishing Pvt. Ltd. Delhi 2014
(18) K.P. Jayaswal:Hindu Polity (Hindi & English edition)
(19) A.S. Altekar: Education in Ancient India (Hindi & English edition)
(20) A.S. Altekar: State & Government (Hindi & English edition)
(21) Vasudev Sharan Aggarwal:*इतिहास दर्शन*
(22) Prof. B.B. Lal: How deep are the roots of Indian civilization? Archaeology Answers
(23) डॉ. वासुदेव पोद्दार- विश्व की कालयात्रा, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, दिल्ली
(24) सत्यकेतु विद्यालंकारः प्राचीन भारत की शासन पद्धति और राजशास्त्र, श्री सरस्वती सदन नई दिल्ली,2015

शास्त्री प्रथम वर्ष- द्वितीय सत्रार्द्ध

भारत: "सांस्कृतिक उत्थान का काल" (प्रारंभिक काल से 550 ई.)

Course Outcomes

पाठ्यक्रम के अंत में छात्रों से निम्नलिखित परिणामों की अपेक्षा की जाती है-

CO1: प्राचीन भारत के ऐतिहासिक स्त्रोतों की व्याख्या कर पाएँगे।

CO2: भारत की वैदिक संस्कृति एवं प्राचीन काल की धार्मिक प्रणालियों के बारे में अवगत होंगे।

CO3: छठी शदी सामान्यकाल पूर्व(बी.सी.ई.) से लेकर मौर्य युग तक के भारत का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

CO4: मौर्योत्तर कालकी प्रमुख शक्तियों और संस्कृतियों से परिचित होंगे।

CO5: संगम कालीन साहित्य एवं समाज से परिचित होंगे।

CO6: भारत के स्वर्णिम युग से परिचित होंगे।

पेपर कोड GE 2- भारत: "सांस्कृतिक उत्थान का काल" (प्रारंभिक काल से 550 ई.)

खण्ड	खण्डनाम	इकाई	इकाई परिचय	कालांश		क्रेडिट-4	अंक
				लेक्चर	ट्यूटोरियल		
1	प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत एवं वैदिक जन	I	प्राचीन भारतीय इतिहास के पुरातात्विक एवं साहित्यिक स्रोत	14	2	1	25
		II	सरस्वती- सिंधु सभ्यता, सरस्वती - सिंधु सभ्यता और वैदिक सभ्यता में साम्य				
		III	आर्यजन का मूल निवास, आर्य समस्या: भ्रम एवं निराकरण				

		IV	वैदिक संस्कृति: राजव्यवस्था, समाज, आर्थिक व्यवस्था				
2	छठी शताब्दी सामान्य काल पूर्व (बी.सी.ई.) से मौर्यकालीन भारत	I	महाजनपद, गणराज्य और शहरी केंद्रों का विस्तार	14	2	1	25
		II	धार्मिक प्रणालियाँ- शैव, वैष्णव, शाक्त जैन और बौद्ध				
		III	मौर्य काल: राजव्यवस्था, समाज, आर्थिक व्यवस्था				
		IV	मौर्यकालः धर्म, संस्कृति एवं कला				
3	मौर्योत्तर काल	I	प्रमुख शक्तियाँ- हिन्द-यवन, शक, कुषाण, शुंग, खारवेल, सातवाहन	14	2	1	25
		II	राजव्यवस्था, समाज, आर्थिक व्यवस्था एवं कला-स्थापत्य				
		III	संगमकालः संगम साहित्य ,समाज				
		IV	मौर्योत्तर युग में व्यापार, व्यापार-मार्ग				
4	स्वर्णिम गुप्तकाल	I	गुप्त और उनके समकालीन वाकाटक, मौखरी वंश	14	2	1	25
		II	राजव्यवस्था, समाज, आर्थिक व्यवस्था				

		III	कला, वास्तुकला, धर्म एवं साहित्य				
		IV	विज्ञान और प्रौद्योगिकी का विकास				
				64		4	100

(1) Agarwal, D.P: The Archaeology of India, 1985

(2) Jayaswal, Vidula: Bhartiya Itihas Ke Adi Charna ki Rooprekha, Delhi, 1987

(3) Majumdar, R.C. and Pusalkar, A.D (edited): The History and Culture of Indian People Vol. I, Vedic Age.

(4) Majumdar, R.C. and Pusalkar, A.D (edited): The History and Culture of Indian People Vol. II: The Age of Imperial UNITY

(5) Pandey, Rajbali: Prachin Bharat, Vishwavidyalya Prakashan, revised edition, Varanasi, 2015.

(6) Raychaudhary, H.C: Political History of Ancient India, rev Edition, 1996 by B.N Mukherjee

(7) Raychaudhary, H.C.: The History and Culture of Ancient India, Vol III: The Classical age

(8) Dilip Kumar Chakrabarti: The oxford Companion to Indian Archaeology:The Archaeological Foundations of Ancient India

(9) Dilip Kumar Chakrabarti:India, an Archaeological History: Palaeolithic Beginning to early Historic foundations

(10) Sastri, K.A Nilakanta: A History of South India, from Prehistoric Times to the fall of Vijyanagar, Oxford University Press, 1955; Also, in Hindi Translation by Bihar Hindi Granth Academy.

(11) Singh, Kripa Shankar: Rigveda, Harrappa Sabhyata and Sanskritic Nirantarta, kitab Ghar publication, New Delhi, 2007

(12) Singh, Upinder: A history of Ancient and Early Medieval India, from Stone Age to early Medieval India. 2008, Pearson, New Delhi.

(13) Dr Bhagwan Singh: Vedic Harappan (Hindi & English)

(14) Dr Ratnesh Kumar Tripathi: Saraswati Nadi Ghati: Sabhyata evam Sanskriti

(15) Govind Chandra Pandey: Vedic Sanskriti

(16) Prof. B.B.Lal: Aaryon ka Adidesh BHARAT

(17) Prof. B.B.Lal: The Rigvedic People : 'Invaders'?/ Immigrants? Or Indigenous?

(18) Prof. B.B.Lal:The Saraswati flows on (Hindi & English)

(19) Prof. B.B.Lal:Distortions in Indian History

(20) Prof. B.B.Lal:How deep are the roots of Indian civilization? Archaeologyl Answers.

(21) Michael Danino: The lost river:On the trail of the saraswati

(22) Pro Altekar *प्राचीन भारतीय शासन पद्धति ,* Vishvavidyalaya, Varanasi*, 2013*

(23) Dr Arvind Singh Gaur:*प्राचीन भारत का इतिहास,* Apex Books Publishers & Distributor, Delhi,2019

(24) *प्रो. शिवाजी सिंहः ऋग्वैदिक आर्य और सरस्वती-सिन्धु सभ्यता, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना।*

(25) *काशीप्रसाद जायसवालः हिन्दू राजशास्त्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी*

(26) Dr Harshavardhan Singh Tomar: *मनु का दण्ड विधान, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली।*

(27) Dr Harshavardhan Singh Tomar: *पुराणेतिवृत्तम, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना,* New Delhi.